IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भक्ति आंदोलन के संदर्भ में कबीर की परंपरा: उत्पत्ति, विकास और स्वरूप

तांग्मी चांगमी

अतिथि प्राध्यापक

वांगचा राजकुमार सरकारी महाविद्यालय

देवमाली, अरुणाचल प्रदेश

प्रस्तावना

भक्तिकाल में जन्मे भारतीय इतिहास के महान संत कवि और निर्गुण संत काव्यधारा के प्रवर्तक संत कबीरदास जी का स्थान पुरे हिंदी साहित्य में अतुलनीय हैं। सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक रूप से शोषित निराश जन के लिए वे एक महानायक, क्रांतिकारी संत और समाज सुधारक के रूप में हमारे सामने उपस्थित होते हैं। मुस्लिम आक्रमणकारियों के आतंक और उनके निरंकुश शासन से पीड़ित हिन्दुओं ने अपने कष्टों से मुक्ति के लिए भक्ति का मार्ग अपनाया। साथ ही हिन्दू समाज मुस्लिम संस्कृति और धर्म से परिचित हुए। मिश्रित संस्कृति और धर्मिक विचारों में परिवर्तन से एक नवीनधारा का सूत्रपात हुआ, जो हिंदी साहित्य में संत काव्य के रूप में प्रवाहित हुई। इसी संत काव्यधारा के प्रवर्तक संत कबीरदास जी थें जिनकी भूमिका उत्तर भारत के भक्ति आंदोलन को आगे बढ़ाने में महत्व पूर्ण हैं। कबीर की भक्ति-भावना मानव मात्र की सच्ची सेवा और भेदभाव, ऊँच-नीच, अपना-पराया से दूर हैं। यही कारण हैं कि आज भी सभी धर्म के लोग कबीर के वचनों का पालन अनुसरण करते हैं। उनके प्रभाव से हिन्दू-मुस्लिम समाज एवं धर्म में नवजीवन का संचार हुआ। साथ ही कबीर की बनियों से स्थानीय एवं प्रांतीय भाषाओं का भी अत्यधिक विकास हुआ।

भक्ति आंदोलन के उदय और कारण को लेकर विद्वानों के अपने-अपने मत व विचार हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार भक्ति आंदोलन के उदय का मुख्य कारण भारतीय राजनीति मे भारी बदलाव का आना हैं देश मे मुसलमानो का शासन प्रतिष्ठित हो जाने के कारण हिन्दुओ को अनेक प्रकार की यातनाए एवं शोषण का सामना करना पड़ा, मुस्लिम शासको द्वारा हिन्दू मंदिरो एवं मूर्तियों को नष्ट करके उनके धर्म का अपमान किये जाते थे जिसके कारण उदासीन हिन्दू जाति के लिए केवल भक्तिमार्ग ही शेष रह गया, हिन्दुओ की ऐसी असहाय व्यवस्था और निराशा ने भक्ति भावना के पल्लवन मे और मजबूती प्रदान की।

जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार भारत मे भक्ति आंदोलन ईसाई धर्म के प्रभाव मे आकर हुआ हैं उनका अनुमान हैं कि दूसरी या तीसरी शताब्दी मे ईसाई धर्म के प्रचारक मद्रास के कुछ हिस्सों मे आ बसे थे जिससे रामानुजाचार्य को धर्म का सन्देश मिला।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने जॉर्ज ग्रियर्सन और शुक्लजी के मतों का खंडन किया उनके अनुसार भक्ति आंदोलन कोई अचानक उत्पन्न ही आंदोलन नहीं हैं यह सातवीं शताब्दी या उससे पूर्व से चली आ रही वैष्णव आचार्यो का शास्त्र सिद्ध ज्ञान और पौराणिक कल्पनाओ से युक्त हो जाने का परिणाम हैं दक्षिण के इन्ही अलवार संतो के द्वारा भक्ति आंदोलन का आरम्भ हुआ जिसकी लहर उत्तर की ओर तेजी से आयी। द्विवेदीजी का मानना हैं कि मुसलमानो का शोषण और अत्याचार अगर भक्ति आंदोलन के उदय का कारण माने तो भक्ति आंदोलन का उदय उत्तर भारत मे पहले होना चाहिए था क्योकि मुसलमानो ने पहले सिंध और उत्तर भारत मे ही अपना शासन प्रतिष्ठित किया था।

भक्तिकाल का समय सीमा शुक्ल जी ने 1375 वी. से लेकर1700 वी. तक को माना हैं इस काल को पूर्वमध्यकाल भी कहते हैं इस काल मे दो काव्यधाराए चली निर्गुण काव्यधारा और सगुण काव्यधारा। निर्गुण काव्यधारा को भी दो भागो मे बाटा गया हैं– ज्ञानाश्रयी शाखा (संतकाव्य) और प्रेमाश्रयी शाखा (सूफीकाव्य)। सगुण शाखा की बात करें तो इसे रामाश्रयी शाखा और कृष्णाश्रयी शाखा मे बाटा गया हैं।

भक्तिकाल की आरंभिक काव्यधारा निर्गुण ज्ञानाश्रयी काव्यधारा अर्थात संत काव्यधारा हैं देशभर मे मुस्लिम शासन स्थापित हो जाने से हिन्दुओ को अपने प्राण रक्षक और आश्रयदाता की कमी महसूस होने लगी जिससे कई हिन्दुओ ने अपनी रक्षा के विचार से इस्लाम धर्म को अपनाया, मुस्लिम शासको ने भी हिन्दुओ की किसी विद्रोह की अशंका से बचने और उन्हें शांत रखने के लिए हिन्दुओ को अपनी संस्कृति से परिचित कराया जिससे देश मे मिश्रित संस्कृति और नई विचारधारा ने जन्म लिया यह नवीन विचारधारा हिंदी साहित्य मे संतकाव्य के रूप मे प्रवाहित हुआ।

संतो के समानांतर विचारधारा उनसे पूर्व आदिकालीन ग्रंथो मे भी दिखाई मिलता हैं उन्होंने अपने जीवन दर्शन का मुख्य आधार उपनिषदो, शंकराचार्य के अद्वैतवाद सिद्धांत,सिद्ध-नाथ औ रइस्लाम से लिया। ब्रह्म, जीव, जगत, माया सम्बंधी विचारधारा को भी उन्होंने उसी रूप मे स्वीकार किया जिस रूप मे उपनिषदो और शंकराचार्य के अद्वैतवाद मे वर्णित हैं।

भक्तिकालीन निर्गुण संत कवियों मे कबीरदास, रैदास, मलूकदास, सुंदरदास और नानकदेव आदि उल्लेखनीय हैं जिनका भक्ति आंदोलन मे महत्वपूर्ण योगदान रहा।

संत कवियों मे कबीरदास जी का व्यक्तित्व सर्वोपरि हैं उनके जन्म और मृत्यु को लेकर कई मत और अनिश्चिताए हैं, कबीर चरित्रबोध के आधार पर कबीर जी का जन्म 1398 ई. (1455 वि.) मे हुआ था।

अनंतदास जी लिखित ‘कबीर परिचई’ मे कबीरदास के जन्म और मृत्यु के तिथि नहीं हैं फिर भी उनके जीवन के कुछ महत्वपूर्ण घटनाओ का उल्लेख अवश्य हैं कि कबीरदास जी का सम्बन्ध काशी के जुलाहे परिवार से था। वे गुरु रामानंद के शिष्य थे और उनको 120 वर्ष का पवित्र जीवन प्राप्त था, कहते हैं रामानंद जी ने किसी विधवा कन्या को पुत्रवती होने का आशीर्वाद भूल से दे दिया था जिससे बालक का जन्म हुआ। लोक लज्जा और सामाजिक भय से बचने के लिए माता ने बालक को लहरतारा तालाब के पास फेंक दिया। वही से नीरू और नीमा नामक जुलाहा जोड़ी ने उस बालक को प्राप्त किया। आगे चलकर यही बालक कबीर नाम से प्रख्यात हुआ।

कबीरपंथ मे कबीरदास के माता-पिता के सम्बन्ध मे कोई उल्लेख नहीं मिलता हैं क्योकि कबीरपंथियो के नजर मे कबीरदास महापुरुष हैं इस प्रकार कबीरदासजी के आविर्भाव और अवसानकाल के सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की जनश्रुतियाँ विधमान हैं।

कबीरदास जी ने अपने भक्ति के माध्यम से मानव समाज के सामूहिक कल्याण की बात कही हैं छुआ-छूत, ऊंच-नीच की भेदभाव से शोषित पीड़ित होती आ रही निम्नवर्गो के कल्याण और उनको ऊपर उठाने की बात कही हैं। मानव की सच्ची सेवा ही उनके भक्ति का प्रेरणा स्रोत हैं उन्होंने धार्मिक अंधविश्वासो और पुरानी परम्पराओ का अंधानुसरण नहीं किया बल्कि वर्णाश्रम जैसे अमानवीय व्यवस्था का कठोरता से विरोध करके सामाजिक समानता और भाईचारे जैसे वसुधैव कुटुंबकम का सन्देश दिया।

कबीरदास जी कहते हैं-

ऊचें कुल क्या जनमिया जो करणी ऊँच न होय

वह निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। उनके ईश्वर निर्गुण निराकार हैं जिसका कोई रूप आकार नहीं हैं। किन्तु उनका ईश्वर संसार के कण-कण मे समाहित हैं जिसका वर्णन करना और देखना संभव नहीं केवल अनुभव किया जा सकता हैं, जिसकी प्राप्ति से ह्रदय का दुख-दर्द सब मिट जाता हैं और सुखशांति की अनुभूति होती हैं। इसी ब्रह्म को उन्होंने राम कहा हैं किन्तु यह राम दशरत सूत नहीं हैं यह अद्वैत और सर्वव्यापी हैं।

कबीरदास जी का रहस्यवाद पर अद्वैतवाद और सूफीमत का गहरा प्रभाव दिखाई देती हैं। उनके अनुसार आत्म और परमात्मा एक हैं दोनों मे भिन्नता नहीं हैं। मनुष्य संसारिक मोह-माया मे ग्रसित होने के कारण ही इस रहस्यवाद की पूर्ति नहीं कर पाता हैं। उन्होंने आत्मा को स्त्री रूप देकर परमात्मा रूपी पति की आराधना की बात कही हैं-

पाणी हीं तै हिम भया, हिम हवै गया विलाइ

जो कुछ था सोई भया, अब कुछ कहा न जाइ

कबीर जी संसार की आकर्षण और सुख सुविधा की सभी वस्तुओ को माया की रस्सियाँ मानते हैं। यह सभी वस्तुए हमें ईश्वर की प्राप्ति मे बाधक का कार्य करती हैं। हमें ईश्वर रूपी रस का पान करने के लिए संसारिक मोह-माया को त्यागना होगा–

कबीर माया पापणीं, हरि सूँ करे हराम

मुखि कड़ियाली कुमति की, कहण न देई राम

कबीरदास जी ने एकेश्वरवाद का सन्देश दिया और बहुदेवोपासना पर करारा प्रहार किया, देश मे राजनीतिक और सामाजिक तौर पर अराजकता की स्थिति पहले से ही थी। बहुदेवोपासना के कारण भक्तो के बीच वाद-विवाद और संघर्ष की स्थिति ओर बढ़ गयी। कबीर ने इसका विरोध किया और समाज के लोगो को एकेश्वरवाद का सन्देश दिया–

राम पियारे छांड़ि कर, करै आन को जाप

वेश्वा केरा पूत ज्यूँ, कहै कौन कूँ बाप

अवतारवाद और मूर्तिपूजा से अंधविश्वास और पाखण्डता को बढ़ावा मिला। विभिन्न देवी-देवताओं के मंदिर और मूर्तियां बनाए जाने लगे, धर्म केवल मंदिर और मस्जिद तक सिमित रह गया धर्म के नाम पर अनेक शोषण और अत्याचार होने लगे जिसके कारण कबीरदास ने मूर्तिपूजा और अवतारवाद का विरोध किया।

पाथर पूजे हरी मिले, तो मै पूजू पहाड़

घर की चक्की कोई न पूजे, जाको पीस खाए संसार

कबीरदास ने गुरु की महिमा को मुक्त कंठ स्वीकार करते हुआ कहा हैं कि गुरु के बिना ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति संभव ही नहीं हैं। गुरु की महिमा को शब्दों मे व्यक्त नहीं किया जा सकता हैं।

पीऊँ लागा जाइ था, लोक वेद के साथि

आगै मैं सत्गुरु मिल्या, दीपक दीया हाथ

निष्कर्ष**:** कबीरदास जी ने अपने युग की समस्याओं को बहुत करीब से देखा और उनसे लड़े। यही कारण हैं कि आज भी वह भर्मित समाज को सही राह दिखाने का कार्य कर रही हैं। उन्होंने ऐसे समाज की कल्पना की जो धर्म-जाति से ऊपर उठ चुका होगा, जो आपसी सहयोग, भाईचारे और विश्वास पर टिका होगा। उन्होंने अपने युग के समाज में नई सामाजिक चेतना का विकास किया। यही कारण हैं कि कबीरदास की रचनाओं को किसी एक काल क्षेत्र में बांधकर नहीं रखा जा सकता। वे काल निरपेक्ष और कालजयी साहित्यकार हैं।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. हिंदी संत काव्य: समाजशास्त्रीय अध्ययन- डॉ. वासुदेव सिंह
2. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- रामकुमार वर्मा
3. संत काव्य- आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
4. हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
5. हिंदी साहित्य उद्भव और विकास– हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेंद्र
7. कबीर हैं कि मरते नहीं- सुभाष चन्द्र कुशवाहा